भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का बोधगया महाबोधि महाविहार मुक्ति संग्राम में योगदान

एम.फिल. बौद्ध अध्ययन में उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2015-16

शोध निर्देशक

डॉ. सुरजीत कुमार सिंह

सहायक प्रोफेसर एवं प्रभारी अध्यक्ष

डॉ. भदन्त आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र

शोधार्थी

लेखराम सेलोकर

पंजीयन सं.- 2015/03/213/003

डॉ. भदन्त आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित
व "NACC" द्वार 'A'' मान्यता प्राप्त केंद्रीय विश्वविद्यालय)
गांधी हिल्स, वर्धा-442005 (महाराष्ट्र) भारत

भूमिका

'चरथ भिक्खवे चारिकं, बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय, अत्थाय हिताय देव मनुस्सानं' यह उद्गार भगवान तथागत बुद्ध ने भिक्षु संघ के संदर्भ में कहा है। तथागत बुद्ध ने हमेशा मनुष्य के कल्याण के बारे में चिंतन किया है। तथागत बुद्ध ने भदन्त आनंद थेर जो बुद्ध के समकालीन भिक्षु थे। उनसे भी बुद्ध ने कहा कि कोई भी मनुष्य तथागत के सद्धम्म से अछूते न रहे। उन्होंने यही काम भिक्षुओं को भी मानव के हित और सुख के लिए करने के लिए कहा। इन सभी बातों को भिक्षुओं ने भी विनम्रता के साथ स्वीकारा था। तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद भिक्षुओं ने भली-भांति कार्य किया। आज भी विश्व में बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। इन कार्यों में भिक्षु संघ का योगदान मिलता है।

भारत से बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार विश्व के अनेक देशों में हुआ है। किसी समय में भारत में बौद्ध धम्म को मानने वालों की संख्या अधिक मात्रा में थी। बौद्ध विश्वविद्यालय में विश्व से पढ़ने के लिए छात्र आते थे। वे अध्ययन करने के पश्चात अपने-अपने देशों में जाकर बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार करते थे। ऐसा ही एक देश जापान है। जिसे 'उगते हुए सूरज' का देश कहते हैं। जैसे भारत को भी 'एशिया की रोशनी' कहते है। जापान में बौद्ध धम्म पहुंचने के बाद धीरे-धीरे बौद्ध धर्म जापान का प्रमुख धर्म हो गया। आज भी जापान में राजनीतिक कार्य होते हैं, तो बौद्ध धर्म के संस्कार के पश्चात ही उन कार्यों का शुभारंभ होता है। ऐसे जापान देश से भारत में 'भदंत आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का आगमन हुआ।

भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई बहुत ही सक्रिय और विनय के लिए सुप्रसिद्ध माने जाते हैं। भारत से बौद्ध धर्म नष्ट होने के बाद बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के धम्म दीक्षा लेने के बाद बौद्ध धर्म को आगे बढ़ाने के लिए विद्वान और बौद्ध धम्म के प्रचारक की अत्यंत आवश्यकता थी। बाबासाहब डॉ. अंबेडकर के धम्म दीक्षा के पश्चात भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार करना, यह अत्यंत कठिन कार्य था। लेकिन भदन्त सुरेई ससाई ने भारत की विभिन्न संस्कृति को स्वीकार करके किसी बात की चिंता न करते हुए बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने देश को भी त्याग दिया। पूज्य भन्तेजी कहते हैं कि मेरा जन्म जापान में हुआ है लेकिन भारत की भूमि बुद्ध की भूमि है, इसलिए मैं उनका पुत्र होने के कारण यह भूमि मेरी भूमि है। भन्तेजी का भारत में जब से आगमन हुआ, तब से उन्होंने भारत में बौद्ध धर्म से संबंधित स्थलों के लिए कार्य किया। आज उनके पवित्र कार्यों को विश्व के जनमानस में प्रसिद्ध स्थान मिला है। भन्तेजी सबसे पहले भारत में आने के बाद भगवान बुद्ध को जिस स्थान पर बुद्धत्व प्राप्त हुआ, उसी स्थान से लगभग 40 कि.मी. दूरी पर स्थित राजगृह पहुंचे। वहां पर जापान देश से आए भिक्षु रहते थे। भन्ते सुरेई ससाई राजगृह

में रहकर महाविहार बनाने के लिए अथक प्रयास करके उस काम बुलन्दी पर पहुंचाया। राजगृह के प्रमुख भिक्षु, भन्ते सुरेई ससाई को उनके दृढ़ संकल्प, विचार, उनके विनयशील आचरण से बहुत पसंद करते थे।

भदन्त सुरेई ससाई राजगृह से नागपुर आने पर उन्होंने आदरणीय श्री वामनराव जी गोड़बोले के घर कुछ दिनों तक रूके। भन्ते सुरेई ससाई ने अपने जीवनकाल में हमेशा मुस्कराते हुए अपनी जिंदगी को समाज के लिए न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कभी भी अपने शरीर और उससे जुड़ी हुई शारीरिक व्याधी को नजरअंदाज करते हुए अपने कार्यों में हमेशा लगे रहे। आज भी उन्हें बौद्ध और अंबेडकरवादी समाज योद्धा के रूप में देखता है। उन्हें कभी भी यह अहसास नहीं हुआ कि वे विदेशी हैं। वे हमेशा कहते हैं कि मैं अब शरीर और मन से भारतीय हूं। पूज्य भन्ते आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का व्यक्तित्व उदार , विशाल और मौलिक है। उनका भारत में ४५ वर्ष से बौद्ध धम्म के प्रचार और प्रसार में योगदान रहा है। विश्व के सभी बौद्ध लोगों का हृदय स्थान रहा बोधगया के महाबोधि महाविहार के लिए अपने जीवन को ध्यान में रखकर हमेशा पुरोहितों के कब्जे से छुटकारा दिलाने के लिए कोशिश करते हैं। मनसर के अत्यंत प्राचीन स्थलों में बौद्ध स्थल को उत्खनन करने के लिए अपने स्वयं के धन दौलत से सन १९९७ में शुरू किया। उसे बहुत ही बेहतर तरीके से यश मिला।

भन्ते सुरेई ससाई सत्य, अहिंसा और मैत्री पर चलने वाले महान व्यक्ति हैं। उन्हें भारत के बौद्ध बहुत ही मान-सम्मान और आदरपूर्वक देखते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है, जैसे बहुत ही कठोर व्यवहार वाले व्यक्ति होंगे। लेकिन जब उनसे प्रत्यक्ष व्यवहार किया जाए, तो उनसे मिलकर ऐसा लगता है कि वे शालीनता वाले व्यक्ति हैं। भन्ते सुरेई ससाई हमेशा विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने हमेशा अपने जीवन को दूसरों के कल्याण के लिए न्यौछावर कर दिया। इसलिए जब भी उन पर कभी कोई संकट आता तो समाज के लोग हमेशा आगे आते। इसलिए उन्होंने अपनी जन्मभूमि (जापान) को छोड़कर तथागत बुद्ध और बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर की जन्मभूमि भारत में आए। भारत आकर उन्होंने जापान पर जो बौद्ध धर्म का ऋण था, उसे दूर करने के लिए भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया।

बौद्ध धम्म के उत्थान के लिए अपने संपूर्ण जीवन को अर्पित करते हुए जापान का भारत से अटूट रिश्ता जोड़ा। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन बौद्ध धम्म के आंदोलन धम्म के प्रचार प्रसार के लिए 'संपूर्ण जीवन अर्पित करके' मेरा शरीर इसी काम के लिए है। ऐसी सोच उन्होंने तैयार करके आज भी वृद्ध शरीर को नजरअंदाज करके कार्य करते रहते हैं। वे हंसी-मजाक में कहते हैं कि मेरे शरीर में नागों को खून चल रहा है। जब वे ऊंचे पहाड़ से नीचे गिरे थे। तब उनके माता-पिता ने उन्हें सांपों के कलेजे खिलाए थे। भन्ते ससाई ने डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के अनुयायी में बौद्ध धम्म के कार्य करने लिए भारत देश में आए, जिसे पिछड़ा राष्ट्र कहा जाता है। इसका प्रमुख कारण भारत के प्रत्येक व्यवसाय और उद्योग का बंटवारा किया है। ऐसे

राष्ट्र में जापान जैसे देश से भारत में आकर काम करना यह बहुत ही उनके लिए कठिनाई का काम था। क्योंकि उनका देश बहुत ही प्रगतिशील राष्ट्र था। भारत से अच्छी सुविधाएं जापान में थीं। फिर भी उन्होंने सभी सुविधाओं को नकारकर भारत जैसे पिछड़े राष्ट्र को अपनी भूमि बनाया। यह एक उनका निर्णय आर्श्चयकारक था। लेकिन उन्होंने अपने निर्णय को बहुत ही मजबूती के साथ स्वीकार किया था।

धम्मपद की गाथा में ऐसे व्यक्ति के लिए दिखाई देती है, जिसमें कहा गया है-

''उट्ठानवतो सतिमतो, सुचिकम्मस्स निसम्मकारिनो।

सञ्ञतस्य च धम्मजीविनो, अप्पमत्तस्स यसोभिवड्ढति।

अर्थ- उद्योगी, जागरूक, पवित्र कर्म करने वाले,सोच समझ कर कार्य करने वाले, संयमी धर्मानुकूल जीविका चलाने वाले, अप्रमादी मनुष्य के यश की सदा वृद्धि होती है।

भन्ते सुरेई ससाई ने इन वचनों को ध्यान में रखकर हमेशा धर्म के लिए कार्य करते रहे। आज भी अपने शरीर के वृद्ध होने पर भी कार्य करते रहते हैं। उन्होंने अपनी अजीविका को सम्यक तरह से चलाने का काम किया है। अपने जीवन को पवित्र और शुद्ध रखकर हमेशा कुशल कार्य करते हुए अकुशल और बुरे कर्म से बचते रहे। यह उनके जीवन की महानता है।

भारतीय लोगों को जापान की संस्कृति से जोड़ने के लिए भारत के लोगों को जापान में भेजा। उसी प्रकार से जापान के लोगों को भारत में बुलाकर भारतीय संस्कृति को प्रत्यक्ष रूप से देखे। भारत में आकर बौद्ध पद्धति को नए ढंग से भारत में निर्माण करे। यह उनका मकसद था। बौद्ध धम्म के नए रूप में पुर्नजागरण करना बहुत ही असंभव शुरू में लग रहा था। लेकिन धीरे-धीरे भारतीय लोगों ने बौद्ध राष्ट्र के बौद्धों से सीखकर उसे नए रूप में भारत में विकसित करने का काम किया। आज भी पूर्ण रूप से लागू नहीं हुई है। लेकिन भन्ते सुरेई ससाई जिस समय भारत में आए थे उसकी अपेक्षा आज बौद्धों ने अपनी संस्कृति को बेहतर ढंग से अपनाने का काम किया है।

भन्ते सुरेई ससाई ने नागपुर और ग्रामीण क्षेत्र में गरीब जनता के कल्याण के लिए बोधिसत्व नागार्जुन मेमोरियल अस्पताल की स्थापना की। उसी प्रकार से ग्रामीण क्षेत्र के गरीब बच्चों के लिए अलग-अलग स्थानों पर ईलाज करने के लिए दवाखाना निर्माण किया। बौद्ध धम्म के आंदोलन को अधिक प्रवाह मिला, जिससे बौद्ध धम्म तीव्रता से आगे बढ़े। इसके लिए नागपुर और भारत के विभिन्न राज्यों के अलग-अलग स्थानों पर बिहार की निर्मिति की। उसका ही परिणाम है कि धीरे-धीरे आज नागपुर और भारत में विहार बनाए जा रहे हैं। उन्होंने बहुत से स्थानों पर भगवान बुद्ध और डॉ. बाबासाहब अंबेडकर की मूर्तियां का अनावरण किया है। जो आज बौद्ध विहार में स्थापित होकर जन-जन में संदेश

का काम कर रही है। उसी से प्रभावित होकर लोगों ने अपने-अपने तरीके से बिहार बनाकर उन विहारों में भगवान बुद्ध और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की मूर्तियां स्थापित की है।

भदन्त सुरेई ससाई भारत में प्रसिद्ध होने के साथ-साथ विश्व में भी प्रसिद्ध है। इसलिए जब भी महाराष्ट्र में कोई भी कार्यक्रम आयोजित किया जाता है तो भन्तेजी को उन कार्यक्रमों में बुलाया जाता है। कभी वे उद्घाटक के तौर पर तो कभी कार्यक्रम की अध्यक्षता के रूप में होते हैं। भदन्त सुरेई ससाई डॉ. साहब अंबेडकर स्मारक समिति दीक्षा भूमि नागपुर के वर्तमान में अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने अपने आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए 'धम्मसेना नायक' मासिका भी निकाली। इस मासिका ने कार्य को लोगों तक पहुंचाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके साथ-साथ 'अखिल भारतीय धम्मसेना' नामक संघटना का निर्माण किया। यह बौद्ध भिक्षु और उपासक के द्वारा समाज में जनजागृति का कार्यक्रम करके लोगों को इन सभी उपक्रमों से जोड़ने का काम करती थी। आज भी 'अखिल भारतीय धम्मसेना' समाज में कार्यरत है।

भदन्त सुरेई ससाई ने भारत में आकर बौद्ध धम्म को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नागपुर में आकर जापान की संस्कृति और बौद्ध धम्म से अवगत कराया। जिससे डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के द्वारा अपनाए बौद्ध धम्म को नई दिशा मिली। आज भारत में सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में बौद्ध धम्म को मानने वाले लोग रहते हैं, उसमें नागपुर के बौद्ध सांस्कृतिक मामले में अधिक जागरूक मिलते हैं। उसका कारण यह है कि डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने शुरूआत में नागपुर में आकर बौद्ध धम्म को अधिक मात्रा में आगे बढ़ाने का काम किया। उसी प्रकार से भन्ते सुरेई ससाई ने भी बौद्ध धम्म को आगे बढ़ाने के लिए उनके ही कार्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करते रहे। आज भी ढलती उम्र में एक नवयुवक की तरह कार्य कर रहे हैं।

जब भारत सरकार के द्वारा उन्हें कैद किया गया था और भारत छोड़कर अपने देश जापान जाने के लिए बोला गया था, तब नागपुर और भारत के बौद्धों ने भारत सरकार का विरोध किया था। आज उन सभी लोगों के कार्य का परिणाम यही है कि हम भन्तेजी के कार्य को याद करते हैं। उस समय नागपुर के दिवंगत श्री हरिदास आवड़े बाबू जो जय-भीम के जनक हैं उन्होंने भी कहा था, नगापुर के लोग भन्ते सुरेई ससाई को ध्यान रखते हैं। ''भन्ते सुरेई ससाई नागपुर में आने के बाद बौद्ध धर्म को आगे बढ़ाने में सफलता मिली है। भन्तेजी के कार्य को हमेशा याद रखा जाएगा। उनका बौद्ध धम्म को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान है। उसी कार्य से प्रेरित होकर मैंने भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई पर लघु शोध प्रबंध लिखा है।

अनुक्रमणिका

आभार **i-ii**

भूमिका **iii-vi**

प्रथम-अध्याय : **१-३४**

भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का जीवन परिचय

द्वितीय-अध्याय : **३५-५५**

बोधगया के महाबोधि महाविहार का इतिहास

तृतीय-अध्याय : **५६-१०३**

भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का बोधगया के महाबोधि महाविहार मुक्तिसंग्राम में योगदान

चतुर्थ-अध्याय : **१०४-११८**

बोधगया के महाबोधि महाविहार मुक्तिसंग्राम में समाचारपत्र की भूमिका

उपसंहार **११९-१२२**

सन्दर्भ ग्रंथ सूची **१२३**

परिशिष्ट **१२४-१३०**

शोध सारांश

भगवान बुद्ध ने बोधगया में ही बुद्धत्व की अवस्था प्राप्त की| विश्व के बौद्धों के लिए बोधगया का महाबोधि महाविहार बहुत ही प्रमुख महत्त्व रखता है| भगवान बुद्ध ने अपने मन को शुद्ध करते हुए प्रथम बार मार पर विजय हासिल की थी| इसी स्थान पर तथागत बुद्ध ने विमुक्ति प्राप्ति हेतु पारमिताओं का अभ्यास करते हुए महाबोधि प्राप्त की थी| इस तरह इस स्थान का महत्त्व केवल पूजा अर्चना के लिए ही नहीं अपितु इस बोधि के सरत्व पर चिंतन मनन करने के लिए भी है| जिसे बुद्ध ने इतनी कठिनाइयों के बाद प्राप्त किया था| वह स्थल मानवीय जीवन के लिए जितना आदर्श है, उतना ही प्रेरणादायी है. बौद्ध धम्म में चार प्रमुख स्थान माने गए है| जिसमें जन्म स्थान-लुन्म्बिनी, बुद्धत्व-बोधगया, प्रथम धर्म उपदेश -सारनाथ और महापरिनिर्वाण-कुशीनगर| इन चारो स्थानों को बौद्ध धर्म में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. जिसमें बोधगया का महाबोधि महाविहार यह शांति, करुणा और सुख प्राप्त करने के लिए ज्ञानवर्धक स्थान है| लेकिन यह सब होने के बावजूद बौद्धों के लिए भारत से बौद्ध धर्म का पतन होने के बाद बौद्ध धर्म से सम्बंधित स्थलों पर गैर बौद्धों ने कब्ज़ा किया है. उसी में महाबोधि महाविहार भी सम्मिलित हैं|

बोधगया के मह्बोधी महाविहार के लिए विश्व के बौद्धों को हमेशा बुरा लगता है| इसका प्रमुख कारण यह था कि यह स्थल गैर बौद्धों ने कब्ज़ा किया है| यह बात जब विश्व के बौद्धों को समझ में आई, तब विश्व के बौद्धों में निराशा उत्पन्न होने लगी| इसी बात को ध्यान में रखते हुए श्रीलंका के पूज्य अनागारिक धम्मपाल जी ने इस महाबोधि महाविहार को हिन्दू महंत से छुटकारा दिलाने के लिए भारतीय बौद्ध और गैर बौद्ध को एकत्रित करने का काम किया| वे सिर्फ भारत के लोगों को जागरूक करने तक सिमित नहीं रहे बल्कि विश्व के बौद्धों को भी जागरूक करके महाबोधि महाविहार को महंतो से मुक्ति मिले. यह कार्य करने लगे| वे सिर्फ बोधगया का महाबोधि महाविहार बौद्धों को मिले. सिर्फ यही तक नहीं रुकना चाहते थे. बल्कि यह स्थल विश्व के लोगों के लिए पवित्र स्थल बने| जिससे बौद्ध धम्म कि अलग पहचान बने| यह प्रमुख मीमांसा अनागारिक धम्मपाल ने की थी. उनका ऐतिहसिक कार्य समाज के सामने आना चाहिए| इसलिए उनके कार्य को मैंने मेरे शोध विषय में सम्मिलित किया है|

अनागरिक धम्मपाल जी से प्रेरणा लेकर भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई भी महाबोधि विहार को उन महंतो से छुटकारा दिलाना चाहते थे| जो महाबोधि विहार को सिर्फ आमदनी का जरिया समझकर अपना कब्जा जमाया हुआ था| भदन्त सुरेई ससाई ने उन महंतों की चली आ रही परम्परा जिसमें पिताजी के पश्चात् उसका पुत्र महाबोधि महाविहार का उत्तराधिकारी होगा| इस चली आ रही परंपरा को पूर्ण रूप से खंडन किया| उस अधिनियम में समिति का अध्यक्ष भी सिर्फ हिन्दू ही होगा| इसमें भी छेद करते हुए उस समिति का अध्यक्ष गैर हिन्दु हो सकता है| भंते

सुरेई ससाई के आन्दोलन के द्वारा समिति को भी बर्खास्त करना पड़ा| भगवान बुद्ध ने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का प्रमुख सूत्र दिया| इस सूत्र में भदन्त सुरेई ससाई का समावेश होता है| उन्होंने आंदोलन करते समय किसी की परवाह न करते हुए बोधगया एक महाबोधि महाविहार मुक्ति संग्राम को आगे बढाने केकाम किया| उनके इन कार्यों से प्रसन्न होकर मैंने उन पर शोध करने का निश्चय किया है| इसलिए भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का बोधगया के महाविहार मुक्ति संग्राम में योगदान पर शोध करते हुए निम्नलिखित तथ्य सामने आए|

1) भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला है|
2) महाबोधि महाविहार के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्राचिन से वर्तमान तक इतिहास को सम्मलित किया है|
3) भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई का बोधगया महाविहार मुक्ति संग्रामें योगदान पर भी विचार किया है|
4) महाबोधि महाविहार के मुक्ति आन्दोलन में कार्य करते समय समाचार पत्र का प्रभाव विभिन्न तरह से मिलता है|
5) बोधगया महाबोधि महाविहार मुक्ति आन्दोलन के समय परोक्ष-अपरोक्ष रूप से जिन्होंने योगदान दिया है| इसे भी शोध के रूप में सम्मिलित किया है|

शोध करते समय उन समस्याओं को भी ध्यान में रखा गया है कि शोध की क्या समस्या है? शोध किस परिप्रेक्ष्य में किया गया है? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोध को सारगर्भित करने का काम मेरे द्वारा किया गया है|

भदन्त आर्य नागार्जुन सुरेई ससाई द्वारा किए और उन सभी आन्दोलन शोध के रूप में प्रमुख स्थान दिया है| उनके इन कार्यों को ध्यान में रखते हुए आज समाज में उनके महान कार्य को समाज के सामने रखना अत्यंत आवश्यक था| इसलिए उनके आन्दोलन और कार्य से प्रेरणा लेकर समाज को नई दिशा देने का काम कर सकते है|